हिन्दी कहानी की विकास यात्रा

स्वरूप और परिभाषा–

कहानी कहना–सुनना मनुष्य की नैसर्गिक आवश्यकता रही है तथा इसके माध्यम से उसने अपनी सामाजिकता का विकास भी किया है क्योंकि कहानी ने यदि उसका मनोरंजन किया है तो उसे जीवनोपयोगी उपदेश भी दिया है। कहानी वाचिक परम्परा की देन है किन्तु जब हम कहानी के आधुनिक स्वरूप को देखते हैं तो पाते हैं कि कहानी घटनाओं का संयोजन मात्र ही नहीं है बल्कि मानव जीवन की जटिलताओं, विद्रूपताओं तथा उसके अन्तर्विरोधों को व्यक्त करने का सशक्त साहित्यिक रूप है। इसलिए आज भी यह एक लोकप्रिय विधा है।

भारतवर्ष में कहानी वैदिक काल से चली आ रही है। प्राचीन काल में कहानी गद्य एवं पद्य दोनों रूपों में मिलती हैं। महाभारत छोटी–छोटी कहानियों का भण्डार हैं। इसी प्रकार जैन धर्म के 'नन्दी सूत्र' भी कहानियों के भण्डार हैं। कहानी के प्रारम्भिक युग में आचार्य गुणाढ्य की 'बृहत्कथा' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस ग्रन्थ में सरस रोचक कहानियाँ संगृहीत हैं। संस्कृत साहित्य की कहानी परम्परा में 'कथासरित्सागर', 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' कहानी कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विश्व भर के विद्वानों ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ कथाशैली के रूप में स्वीकार किया है। इसी कारण विश्वभर की लगभग सभी भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है।

भारत में अरबों के प्रवेश के साथ ही अरब की 'अरेबियन नाइट्स' के द्वारा कहानियों का दूसरा युग प्रारम्भ हुआ। इस युग में आध्यात्मिक प्रेम की कथाएँ लिखी गईं, इनके अतिरिक्त हास्य–विनोद की कहानियाँ (बीरबल विनोद) आदि लिखी गईं।

सन् 1803 में मुंशी इंशा अल्लाह खाँ द्वारा 'रानी केतकी की कहानी' लिखी गई। सन् 1900 में आधुनिक हिन्दी कहानी के मौलिक लेखन का श्रीगणेश प्रयाग से प्रकाशित 'सरस्वती पत्रिका' से हुआ। इस पत्रिका में किशोरीलाल गोस्वामी की कहानी 'इन्दुमती' प्रकाशित हुई जिसे हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी का श्रेय दिया जाता है। कतिपय विद्वान बंग महिला की कहानी 'दुलाई वाली' (1907) को भी हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी स्वीकारते हैं।

सन् 1909 में काशी से 'इन्दु' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ जिसमें 1911 में जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई। सन् 1911 से 1927 तक कहानी का विकास काल रहा, इसमें चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'सुखमय जीवन' विश्वम्भर नाथ की 'परदेश' (1912), राजा राधिकारमण सिंह की 'कानों में कंगना' (1913) मासिक पत्रिका 'इन्दु' में प्रकाशित हुई। सन् 1914 में आचार्य चतुरसेन शास्त्री की 'गृहलक्ष्मी' व 1915 में चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की अमर कहानी 'उसने कहा था' प्रकाशित हुई। इसी वर्ष कथा साहित्य के अमर कथाकार मुंशी प्रेमचन्द की 'पंच परमेश्वर' कहानी प्रकाशित हुई। हिन्दी कहानी को जनजीवन से जोड़ने और उसके क्षेत्र को व्यापकता प्रदान करने का श्रेय प्रेमचन्द को है। यथार्थ जीवन

को अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर उन्होंने समाज की रूढ़ियों, धर्म के बाह्याडम्बरों, राजनीति के खोखलेपन, उत्कट देश–प्रेम, आर्थिक वैषम्य, कृषक वर्ग एवं श्रमिक वर्ग के शोषण के जीवन्त सशक्त चित्र खींचे। उन्होंने हिन्दी में यथार्थवादी आदर्शोन्मुख कहानी लेखन का सूत्रपात किया। वे अपनी आरम्भिक कहानियों में घटनाओं को महत्त्व देते रहे पर धीरे–धीरे उनकी दृष्टि चरित्र की ओर गई। अन्ततः मनोवैज्ञानिक अनुभूति को ही उन्होंने अपनी कहानी का आधार स्वीकार किया। ग्राम्य जीवन को केन्द्र में रखकर लिखी गई कहानियाँ 'पंच परमेश्वर', 'बूढ़ी काकी', 'ईदगाह', 'सुजान भगत', 'पूस की रात', 'कफन' आदि सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ हैं।

कहानी विकास युग में अधिकांश कहानीकार प्रेमचन्द की शिल्पकला के अनुगामी रहे। सियारामशरण गुप्त की कहानियाँ यथार्थ पृष्ठभूमि पर निर्मित होकर भी आदर्शवादी जीवन–दृष्टि पर अधिक बल देती हैं। वृन्दावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक, सामाजिक और शिकार सम्बन्धी कहानियों का लेखन किया जिनमें आदर्शोन्मुख यथार्थ की प्रवृत्ति अधिक रही है।

प्रेमचन्द के समकालीन कहानीकारों में जयशंकर प्रसाद का योगदान भी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रहा है। उन्होंने कहानी में भावमूलक आदर्शवादी परम्परा की नींव डाली। उनकी कहानियाँ कभी गीतिकाव्य की संवेदना से प्रेरित तो कहीं महाकाव्य की संवेदना से प्रेरित होकर लिखी गईं। 'आकाशदीप' और 'पुरस्कार' उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। प्राचीन भारत की वैभवपूर्ण, सांस्कृतिक झाँकी का चित्रण इनकी कहानियों में देखने को मिलता है।

हिन्दी कहानी के संक्रान्ति युग में कहानी व्यक्तिपरक एवं भावपरक हो गई। जैनेन्द्र ने नैतिक मान्यताओं के आधार पर अपने चरित्र खड़े किए। अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी के पात्र अहं और विद्रोह की भित्ति पर खड़े हुए। अज्ञेय की 'शत्रु' कहानी इसका उदाहरण है। इस युग में आकर पात्रों के मन में उठने वाला अन्तर्द्वन्द्व बाहरी घटनाओं से सम्बन्धित नहीं रहा। अब अवचेतन मन की आन्तरिक प्रवृत्तियाँ ही उनके बाह्य–व्यापारों का संचालन करने लगीं। जैनेन्द्र ने अपनी कहानियों में घटनाओं और कार्यों की अपेक्षा मानसिक ऊहापोह विश्लेषण को प्रधानता दी। अज्ञेय ने अपने चरित्रों में वैयक्तिकता को अधिक प्रश्रय दिया।

मार्क्सवादी विचारधारा की पोषक कहानियों में वर्ग संघर्ष का चित्रण मिलता है। इन प्रगतिवादी कहानीकारों ने धार्मिक अन्धविश्वासों, परम्परागत रूढ़ियों, समाज में चलते आ रहे शोषण चक्र का तीव्रता के साथ विरोध और खण्डन किया। उन्होंने व्यक्ति के रूप में न देखकर समाज के माध्यम से देखा और पूरे इतिहास का आर्थिक दृष्टि से मूल्यांकन कर प्रतिपादित किया कि उत्पादन के साधन जब तक उत्पादनकर्ता के हाथों में न आयेंगे तब तक ये संघर्ष जारी रहेगा।

इस संघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति यशपाल की कहानियों में देखने को मिलती हैं। अन्य कहानीकारों में रांगेय राघव, राहुल सांकृत्यायन आदि उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कहानी ने नई दिशा की ओर कदम बढ़ाये। देश के सामने नए दृष्टिकोण उभरे। जीवन मूल्यों में परिवर्तन आने लगा। कहानी के शिल्प में नए प्रयोग होने लगे। सोच और चिन्तन में परिवर्तन आया। इस काल में निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, विष्णु प्रभाकर, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर, मोहन राकेश, मन्नू भण्डारी, ज्ञान रंजन आदि कहानीकार प्रमुख रूप से उभरे। समकालीन कहानी का रचना संसार अपने आस–पास के परिवेश से निर्मित है। जीवन की अनेक समस्याओं को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त किया है। इसी काल में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव व कमलेश्वर ने 'नई कहानी' के आन्दोलन का सूत्रपात किया। तत्पश्चात् सचेतन कहानी और अकहानी जैसे अन्य आन्दोलन शुरू हुए।

राजस्थान के कहानीकारों में यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', मणि मधुकर, पानू खोलिया, हेतु भारद्वाज, ईश्वर चन्दर, रमेश उपाध्याय, आलम शाह खान व स्वयं प्रकाश आदि ने हिन्दी कहानी में अपना योगदान दिया।

कहानी के तत्त्व–

कहानी के मूलतः छः तत्व हैं। ये हैं– विषयवस्तु अथवा कथानक, चरित्र, संवाद, भाषा शैली, वातावरण और उद्देश्य।

कथानक (विषयवस्तु)–

प्रत्येक कहानी में कोई न कोई घटनाक्रम अवश्य होता है। कहानी में वर्णित घटनाओं के समूह को कथानक कहते हैं। कथानक किसी भी कहानी की आत्मा है। इसलिए कथानक की योजना इस प्रकार होनी चाहिए कि सभी घटनाएं और प्रसंग परस्पर सम्बद्ध हों। उनमें बिखराव या परस्पर विरोध नहीं हो। मौलिकता, रोचकता, सुसंगठन, जिज्ञासा, कुतूहल की सृष्टि अच्छे कथानक के गुण हैं। साधारण से साधारण कथानक को भी कहानीकार कल्पना एवं मर्मस्पर्शी अनुभूतियों से सजाकर एक वैचित्र्य और आकर्षण प्रदान कर सकता है।

चरित्र (पात्र)–

प्रत्येक कहानी में कुछ पात्र होते हैं जो कथानक के सजीव संचालक होते हैं। इनमें एक ओर कथानक का आरम्भ, विकास और अन्त होता है तो दूसरी ओर हम कहानी में इनसे आत्मीयता प्राप्त करते हैं। कहानी में मुख्य रूप से दो प्रकार के पात्र होते हैं, पहला वर्गगत अर्थात् जो अपने वर्ग की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, दूसरे व्यक्तिगत वे पात्र जिनकी निजी विशेषताएँ होती हैं।

कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। कहानी में लेखक की दृष्टि प्रमुख पात्र के चरित्र पर अधिक रहती है। इसलिए अन्य पात्रों के चरित्र का विकास मुख्य पात्र के सहारे ही होना चाहिए। कहानी में पात्रों की संख्या अधिक न हो। प्रमुख पात्र का चरित्र ही क्षण भर के लिए अमिट प्रभाव छोड़कर चला जाय। जो भी पात्र कहानी में आते हैं उनके व्यक्तित्व को पूरी गरिमा के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए तथा उनकी भावनाओं को पूरी तरह अभिव्यक्ति मिलनी चाहिए।

संवाद–

संवाद कहानी का आवश्यक अंग है। कहानी में पात्रों के वार्तालाप संवाद कहलाते हैं। ये संवाद कहानी को सजीव और प्रभावशाली बनाते हैं। कहानी में संवाद कथानक को गति प्रदान करते हैं, पात्रों का चरित्र–चित्रण करते हैं, कहानी को स्वाभाविकता प्रदान करते हैं, उसका उद्देश्य स्पष्ट करते हैं। संवाद का सबसे बड़ा गुण है–जिज्ञासा और कुतूहल उत्पन्न करना। इन सब कार्यों का संपादन तभी हो सकता है जब कहानी के संवाद पात्र, परिस्थिति एवं घटना के अनुकूल हों, संक्षिप्त एवं अर्थपूर्ण हों, चरित्रों को उभारने वाले, सरल एवं स्पष्ट हों।

भाषा शैली–

कहानी की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि उसमें मूल संवेदना को व्यक्त करने की पूरी क्षमता हो।

कहानीकार का दायित्व और उसकी रचना शक्ति का सच्चा परिचय उसकी भाषा से ही मिलता है। भाषा की दृष्टि से सफल कहानी वही मानी जाती है जिसकी भाषा सरल, स्पष्ट प्रभावमयी और विषय एवं पात्रानुकूल हो। वह ओज, माधुर्य गुणों से युक्त हो।

जहाँ तक शैली का सम्बन्ध है उसमें सजीवता, रोचकता, संकेतात्मकता तथा प्रभावात्मकता आदि का होना आवश्यक है। शैली का संबंध कहानी के सम्पूर्ण तत्त्वों से रहता है। कहानीकार इन शैलियों में कहानी लिख सकता है– वर्णन–प्रधान–शैली, आत्मकथात्मक–शैली, पात्रात्मक शैली, डायरी शैली, नाटकीय शैली, भावनात्मक शैली आदि। कहानी के लिए सरस, संवादात्मक शैली अधिक उपयुक्त होती है।

वातावरण–

वातावरण का अर्थ है, उन सभी परिस्थितियों का चित्रण करना जिनमें कहानी की घटनाएँ घटित हो रही हैं तथा जिनमें कहानी के पात्र साँस ले रहे हैं। सफल कहानी में देश, काल, प्रकृति, परिवेश आदि का प्रभाव सृष्टि के लिए अनिवार्य तत्त्व के रूप में स्वीकार किया जाता है। वातावरण की सृष्टि से कहानी हृदय पर मार्मिक प्रभाव की अभिव्यंजना करती है। कहानीकार पूरे संदर्भ में सामाजिक परिवेश को देखता है, उसका यथार्थ वर्णन करता है। वातावरण के माध्यम से वह कहानी में एकांतिक प्रभाव लाने की स्थिति उत्पन्न करता है। सही वातावरण किसी भी कहानी को विश्वसनीय बनाता है। 'उसने कहा था', 'पुरस्कार' जैसी कहानियों की प्रभावान्विति में वातावरण का सहयोग देखा जा सकता है।

उद्देश्य–

कहानी की रचना का उद्देश्य यूं तो मनोरंजन माना जाता है किन्तु मनोरंजन ही कहानी का एक मात्र उद्देश्य नहीं होता। कहानी में जीवन के किसी एक पक्ष के प्रति दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है। आज की कहानी मानव–जीवन के किसी मनोवैज्ञानिक सत्य को उजागर करती है। कहानी द्वारा जीवन–सत्य की व्याख्या एवं मानवीय आदर्शों की स्थापना भी की जाती है। आकार में लघु होने के उपरान्त भी कहानी महान विचारों का वहन करती है। उदाहरण के लिए– भारतेन्दु युग की कहानियों का मुख्य स्वर सामाजिक सुधारवादी एवं धार्मिक दृष्टिकोण से प्रेरित था। प्रेमचन्द की कहानियाँ मध्यम वर्ग के सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण है। जैनेन्द्र की कहानियों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रमुख है तो नई कहानियों में सामाजिक जीवन की विसंगतियों एवं जीवन के अभावों, निराशाओं, कुंठाओं का सटीक चित्रण हुआ है।

अतः स्पष्ट है कहानी का उद्देश्य कहानीकार के दृष्टिकोण एवं विषयवस्तु के अनुकूल ही होता है।

*****